हिन्दी-विभाग

P.G. Sem-II

डॉ० कविता कुमारी सिंह

विषय - द्विवेदीयुग में गद्य का विकास।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में गद्य की विविध विधाओं का आविर्भाव हुआ। यही कारण है कि इस युग को गद्य युग भी कहा जाता है। भारतेन्दुयुग में हिन्दी-भाषा के प्रचार के संबंध में महत्वपू[र्ण] आन्दोलन चला था, जिसका महत्व उस काल में नि[...] साहित्य से कम न था। इस संबंध में डॉ० गुलाबराय ने लिखा है - "हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान की पुकार उठी और निजभाषा की उन्नति को अन्य सब उन्नतियों का मूल समझा जाने लगा। हिन्दी का झण्डा लेकर जत्थे के जत्थे प्र[...] में सम्मिलित हुए।"

द्विवेदीयुग में हिन्दी साहित्य शैशवावस्था से आगे यौवनावस्था की ओर अग्रसर हो रहा था। इ[स] में साहित्य का संबंध सर्वसाधारण से था। इस का[ल] के बजाय गद्य का अधिक विकास हुआ। खड़ी [...] गद्य के प्रारम्भिक काल में लल्लूलाल जी, [...] मिश्र, मुंशी सदासुख लाल,

सोमवार 1

मुंशी सदा सुखलाल और सैयद इन्शाअल्लाखां ने बड़ा सहयोग किया। ये चार महानुभाव खड़ी बोली गद्य के प्रवर्तक माने जाते हैं।

आचार्य द्विवेदी ने खड़ी बोली गद्य की प्रौढ़ शैली का स्वरूप निश्चित किया और गद्य साहित्य के स्तर की वृद्धि में बड़ा योग दिया। भारतेन्दु-युग में नाटक, उपन्यास, निबन्ध का विकास हुआ तथा आलोचना का भी श्रीगणेश हुआ। साहित्य आलोचना का विकास तो सही मायने में द्विवेदीयुग में ही हुआ। लघु-कथा के रूप में गद्य की एक नई शाखा का जन्म भी

मंगलवार 2

इसी युग में हुआ। रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द जैसे प्रतिभाशाली लेखकों ने विविध-शैलियों द्वारा गद्य के विभिन्न क्षेत्रों को समृद्ध बनाया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी प्रौढ़ शैली में सूक्ष्म विषयों का गहन विश्लेषण किया है। शुक्ल जी की शैली गद्य लेखकों के लिए आदर्श रही है। प्रेमचन्द, सुदर्शन, कौशिक, जैनेन्द्र तथा अज्ञेय जी ने कहानी-उपन्यास के क्षेत्र में बहुत काम किया।

गद्य की विविध विधाओं का विकास :—

द्विवेदीयुग में कुछ तो भारतेन्दु-यु

के सिद्धान्तों का विकास हुआ और कुछ नई विधाएँ आविर्भूत हुईं। भारतेन्दु युग में नाट्य साहित्य का जिस तीव्र गति से विकास हुआ वैसी तीव्र गति से द्विवेदी युग में न हो सका। द्विवेदी युग में मौलिक नाटक अधिकतर इतिहास एवं पुराणों से संबंधित हैं। सामाजिक जीवन और उसकी समस्याओं से संबंधित नाटक बहुत कम हैं।

आधुनिक युग में ज्यों-ज्यों विज्ञान की प्रगति हुई और समय तथा स्थान की दूरी कम हुई, त्यों-त्यों मानव जीवन की क्षिप्रता आती गई। आज अनेक अंकों वाले नाटक को देखने का धैर्य नहीं रह गया। नाटकों

की तुलना में एकांकियों का विकास तेजी से हुआ। एकांकी नाटकों का प्राधान्य है। द्विवेदी युग के एकांकियों पर विदेशी प्रभाव है। जिन विदेशी एकांकीकारों के एकांकियों के अनुवाद तैयार किये गये उनमें टॉलस्टाय, इब्सन और गाल्सवर्दी प्रमुख हैं। द्विवेदीयुग के एकांकीकारों में सियारामशरण, बद्रीनाथ भट्ट, रामनरेश त्रिपाठी, बेचन शर्मा और जी. पी. श्रीवास्तव मुख्य हैं। पं० हरिशंकर शर्मा के 'बुढ़ऊ का ब्याह' एकांकी में अनमेल विवाह तथा दहेज-प्रथा पर प्रकाश डाला गया है।

मंगलवार

हिन्दी उपन्यास विधा का वर्तमान रूप का आविर्भाव आधुनिक काल में हुआ। अनूदित तथा मौलिक दोनों प्रकार के उपन्यास भारतेन्दु युग में लिखे जाने लगे थे। द्विवेदी युग में भी उर्दू, अंग्रेजी और बंगला-भाषा के उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया गया। 'देवकीनन्दन खत्री और किशोरीलाल गोस्वामी ने मौलिक उपन्यास लिखे पर वे उच्चकोटि के नहीं कहे जा सकते। वैसे खत्री जी के उपन्यास 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता सन्तति' अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुए थे।

द्विवेदीयुग में ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे

बुधवार 10

गये। मेह उपन्यास अधिकतर राजपूत, मुगल-युग से संबंधित है। इन उपन्यासों में पात्रों के चरित्र-चित्रण की अपेक्षा घटनाओं की प्रमुखता है। मिश्रबन्धुओं ने कुछ ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं जिनमें आधुनिक युग के आचार-विचारों का भी समावेश कर दिया है। मिश्रबन्धुओं के ऐतिहासिक उपन्यासों में चन्द्रगुप्त मौर्य, उदयन, वीरमणि, पुष्पमित्र प्रमुख हैं।

निबन्ध गद्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। सामाजिक सुधार तथा राजनीतिक चेतना के वाहक के रूप में निबन्ध अत्यधिक माध्यम बना